Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, NOV-DEC, 2021, VOL- 9/68

भारतीय ज्ञान परंपरा एवं स्वदेशी ज्ञान की वैश्विक परिदृश्य में प्रासंगिकता एवं महत्व

प्रो. गीता सिंह

निदेशक, सेंटर फॉर प्रोफेशनल डेवलपमेंट इन हायर एजुकेशन (सीपीडीएचई), यूजीसी-मानव संसाधन विकास केंद्र, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली 110007

Paper Received On: 21 DEC 2021

Peer Reviewed On: 31 DEC 2021

Published On: 1 JAN 2022

Abstract

किसी भी देश की ज्ञान प्रणाली का मूल घटक उसका स्वदेशी ज्ञान होता है। यह शोध पत्र भारतीय ज्ञान परंपरा एवं स्वदेशी ज्ञान की वैश्विक परिदृश्य में प्रासंगिकता एवं महत्व को परिभाषित करके एक सिंहावलोकन प्रस्तुत करता है जो किसी संस्कृति या समाज के लिए अद्वितीय है और स्थानीय स्तर के निर्णय के लिए आधार बनाता है। भारतीय ज्ञान परंपरा एवं स्वदेशी ज्ञान की विशेषताएं और प्रकार अन्य देशों में सफल स्वदेशी ज्ञान के पहलुओं के साथ सामाजिक विकास पर इसका प्रभाव डालता है। यह ज्ञान एक सांस्कृतिक परिसर का अभिन्न अंग है जिसमें भाषा, सामाजिक प्रणाली का वर्गीकरण, संसाधनों का उपयोग, प्रथाओं, सामाजिक संपर्क, अनुष्ठान और आध्यात्मिकता भी शामिल है। जिसे समय के साथ विकसित किया गया है। भारतीय ज्ञान परंपरा और स्वदेशी ज्ञान से तात्पर्य समाज द्वारा विकसित समझ, कौशल और दर्शन से है जिसका अपने प्राकृतिक परिवेश के साथ बातचीत का लंबा इतिहास रहा है। हालाँकि पहले स्वदेशी ज्ञान को विकास और संरक्षण के क्षेत्र में बड़े पैमाने पर नज़रअंदाज किया गया था, लेकिन स्वदेशी ज्ञान वर्तमान में एक पुनरुद्धार की ओर बढ़ रहा है और विकास परियोजनाओं में इसका समावेश आवश्यक माना जाता है। कई लोगों का मानना है कि स्वदेशी ज्ञान इस प्रकार एक शक्तिशाली आधार प्रदान कर सकता है जिससे संसाधनों के प्रबंधन के वैकल्पिक तरीके विकसित किए जा सकते हैं। भारतीय ज्ञान, परंपरा, सभ्यता एवं सांस्कृतिक जीवन ने विश्व में अपनी गहरी छाप छोड़ी है भारतीय सभ्यता सदैव ही गतिशील रही है एवं इस भारतीय ज्ञान परंपरा और सभ्यता की परंपराओं को दुनिया ने अपनाया एवं लाभ उठाया है। भारतीय ज्ञान परंपरा एवं स्वदेशी ज्ञान एक गतिशील प्रणाली में अंतर्निहित है जिसमें आध्यात्मिकता, रिश्तेदारी, स्थानीय राजनीति और अन्य कारक एक साथ बंधे हैं और एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। शोधकर्ताओं को संस्कृति के किसी अन्य पहलू की जांच करने के लिए तैयार रहना चाहिए जो स्वदेशी ज्ञान को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। प्रस्तुत शोध लेख भारतीय ज्ञान परंपरा एवं स्वदेशी ज्ञान को बनाए रखने और स्वदेशी ज्ञान की रक्षा करने उसके महत्व, विशेषताएं एवं सीमाओं के बारे में व्याख्या करने का प्रयास करता है।

मुख्य बिंदु: *भारतीय ज्ञान परंपरा, स्वदेशी ज्ञान, भारतीय ज्ञान की प्रासंगिकता,*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परंपरा अद्वितीय ज्ञान और प्रज्ञा का प्रतीक माना जाता है जिसमें ज्ञान एवं विज्ञान, लौकिक एवं पारलौकिक, कर्म एवं धर्म तथा भोग एवं त्याग का अद्भुत समन्वय होता है (तिवारी, 2021)। स्वदेशी या देशज ज्ञान को ऐसे ज्ञान के रूप में परिभाषित किया जाता है जो स्थानिक और सांस्कृतिक संदर्भ में विशिष्ट, सामूहिक या समग्र रूप से अनुकूल है। स्थानीय और स्वदेशी ज्ञान से तात्पर्य समाज द्वारा विकसित समझ, कौशल और दर्शन

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

से है जिसका अपने प्राकृतिक परिवेश के साथ बातचीत का लंबा इतिहास रहा है। ग्रामीण और स्वदेशी लोगों के लिए स्थानीय ज्ञान दिन-प्रतिदिन के जीवन के मूलभूत पहलुओं के बारे में निर्णय लेने की सूचना देता है। सूचना प्राप्त करने एवं जानने के ये अनूठे तरीके दुनिया की सांस्कृतिक विविधता के महत्वपूर्ण पहलू हैं और स्थानीय रूप से उपयुक्त सतत विकास के लिए एक आधार प्रदान करते हैं। विशिष्ट ज्ञान के संदर्भ को विभिन्न समुदायों ने सदियों से खुद विकसित किया और साथ ही इसे संजोया हुआ है और उन्हें अपने वातावरण में अक्सर लंबे समय से संजो का रखने का प्रयास किया है जिसे "स्थानीय" ज्ञान के रूप में भी जाना जाता है। स्वदेशी ज्ञान धारणाओं, सूचनाओं और व्यवहारों का एक ऐसा समूह है जो स्थानीय समुदाय के सदस्यों को उनके प्राकृतिक संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग करने के संदर्भ में मार्गदर्शन प्रदान करता है। स्वदेशी ज्ञान, सामान्यतः स्थानीय लोगों द्वारा एक विशेष वातावरण में जीवनयापन करने के लिए उपयोग किया जाने वाला ज्ञान है (वॉरेन, 1991)। यह ज्ञान एक सांस्कृतिक परिसर का अभिन्न अंग है जिसमें भाषा, सामाजिक प्रणाली का वर्गीकरण, संसाधनों का उपयोग, प्रथाओं, सामाजिक संपर्क, अनुष्ठान और आध्यात्मिकता भी शामिल है स्वदेशी स्थानों में उत्खनन करने वाले पुरातत्वविद, स्वदेशी ज्ञान के भौतिक साक्ष्य (जैसे कलाकृतियां, परिदृश्य संशोधन, अनुष्ठान चिह्न, पत्थर की नक्काशी, जीव अवशेष) को उजागर कर सकते हैं, लेकिन इस साक्ष्य का अर्थ गैर-स्वदेशी या गैर-स्थानीय जांचकर्ताओं के लिए स्पष्ट नहीं हो सकता है। इन स्थानीयकृत ज्ञान में महत्वपूर्ण जानकारी होती है। हालांकि, पुरातत्वविदों को गूढ़ ज्ञान, पवित्र स्थलों, अनुष्ठान परिदृश्य और सांस्कृतिक संपत्ति के साथ हस्तक्षेप से बचने का प्रयास करना चाहिए। नैतिक अभ्यास सुनिश्चित करने और संवेदनशील प्रथाओं को अनावश्यक नुकसान से बचने के साधन के रूप में स्थानीय/स्वदेशी/देशज ज्ञान-धारकों के साथ अनुसंधान परामर्श की सिफारिश की जाती है।

स्वदेशी ज्ञान

स्वदेशी ज्ञान को "प्रकृति के निकट संपर्क में रहने वाली पीढ़ियों के माध्यम से लोगों के समूह द्वारा निर्मित ज्ञान का एक निकाय" के रूप में परिभाषित किया जा सकता है (जॉनसन, 1992)। पारंपरिक स्वदेशी ज्ञान को समय के साथ संस्कृति और परिदृश्य के साथ स्वदेशी संबंधों को संरक्षित, संवाद और प्रासंगिक बनाने के उद्देश्य से ज्ञान, विश्वासों और परंपराओं को देशज ज्ञान के रूप में परिभाषित किया जाता है। कोई "ज्ञान" को तथ्यात्मक आंकड़े के रूप में, "विश्वास" को धार्मिक अवधारणाओं के रूप में, और "परंपरा" को अभ्यास के रूप में अलग कर सकता है, लेकिन इन शब्दों का उपयोग अक्सर स्वदेशी ज्ञानमीमांसा का वर्णन करने के लिए सटीक और परस्पर रूप से किया जाता है। सामाजिक संघर्ष, मौखिक परंपराओं, अनुष्ठान प्रथाओं और अन्य गतिविधियों के माध्यम से स्वदेशी ज्ञान को औपचारिक और अनौपचारिक रूप से परिजन समूहों और समुदायों के बीच व्यक्त किया जाता है। इस अवधारणा को निर्दिष्ट करने के लिए सतत विकास के क्षेत्र में उपयोग की जाने वाली शर्तों में स्वदेशी तकनीकी ज्ञान, पारंपरिक पर्यावरण ज्ञान, ग्रामीण ज्ञान, स्थानीय ज्ञान और किसान या पशुचारक का ज्ञान शामिल है (लंगिल्ल, 2001)। हालाँकि पहले स्वदेशी ज्ञान को विकास और संरक्षण के क्षेत्र में बड़े पैमाने पर नज़रअंदाज किया गया था, लेकिन स्वदेशी ज्ञान वर्तमान में एक पुनरुद्धार की ओर बढ़ रहा है और विकास परियोजनाओं में

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

इसका समावेश आवश्यक माना जाता है। इस बात पर चर्चा होती है कि स्वदेशी ज्ञान किस हद तक उपयोगी है और किसके लिए, उस स्थिति के बाहर जिसके भीतर इसका निर्माण किया गया था। हालांकि यह व्यापक रूप से माना जाता है कि स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों से कई सबक सीखे जा सकते हैं, अंतरराष्ट्रीय कानून के भीतर स्वदेशी ज्ञान अपेक्षाकृत कम सुरक्षित है और इस तरह यह दुरुपयोग और अस्वीकृति के प्रति संवेदनशील है (मिस्ट्री, 2009)। । स्थानीय ज्ञान जो किसी विशेष समुदाय या समाज के लिए अद्वितीय है जिसे समय के साथ विकसित किया गया है। समय के साथ दुनिया भर के स्वदेशी लोगों ने अपनी सांस्कृतिक अनुभव में निहित विशिष्ट समझ को संरक्षित किया है जो विशिष्ट पारिस्थितिक तंत्र में मानव, गैर-मानव और मनुष्यों के अलावा अन्य के बीच संबंधों का मार्गदर्शन करता है। ये समझ और संबंध एक ऐसी प्रणाली का निर्माण करते हैं जिसे सामान्य तौर पर स्वदेशी ज्ञान के रूप में पहचाना जाता है जिसे पारंपरिक ज्ञान या आदिवासी ज्ञान भी कहा जाता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा

प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान परंपरा और विचार के आलोक में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तैयार की गई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार 2040 तक भारतीय शिक्षा के लिए एक ऐसी शिक्षा प्रणाली का लक्ष्य होगा जो कि किसी से पीछे नहीं है। ऐसी शिक्षा व्यवस्था होगी जहां किसी भी सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि से संबिंधत विद्यार्थियों को समान रूप से सर्वोच्च गुणवत्ता की शिक्षा उपलब्ध हो सकेगी। यह 21वीं सदी की पहली शिक्षा नीति है जिसका प्रमुख लक्ष्य एवं उद्देश्य हमारे देश के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है तथा भारत की ज्ञान परंपरा, और सांस्कृतिक मूल्यों के आधार को बरकरार रखते हुए, 21वीं सदी की शिक्षा के लिए आकांक्षात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करना है। (तिवारी, 2021) भारतीय ज्ञान, परंपरा, सभ्यता एवं सांस्कृतिक जीवन ने विश्व में अपनी गहरी छाप छोड़ी है भारतीय सभ्यता सदैव ही गतिशील रही है एवं इस भारतीय ज्ञान परंपरा और सभ्यता की परंपराओं को दुनिया ने अपनाया एवं लाभ उठाया है (सक्सेना, 2019)।

स्वदेशी ज्ञान के प्रकार

स्वदेशी ज्ञान अनुसंधान ने मूल रूप से पर्यावरण के स्वदेशी तकनीकी ज्ञान पर जोर दिया था अब यह स्वीकार किया जाता है कि स्वदेशी ज्ञान की अवधारणा इस संकीर्ण व्याख्या से परे है। स्वदेशी ज्ञान को अब अपने व्यापक अर्थों में सांस्कृतिक ज्ञान माना जाता है जिसमें स्थानीय जीवन शैली के सभी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और आध्यात्मिक पहलू शामिल हैं। हालांकि सतत विकास शोधकर्ताओं ने स्वदेशी ज्ञान की निम्नलिखित श्रेणियों को विशेष रूप से स्वदेशी ज्ञान के प्रकार के रूप में व्यक्त किया है-

1. संसाधन प्रबंधन ज्ञान और उपकरण,
2. तकनीक, प्रथाएं और पशुचारण,
3. कृषि, कृषि वानिकी, जल प्रबंधन और जंगली भोजन के संग्रह से संबंधित नियम;
4. पौधों, जानवरों, मिट्टी, पानी और मौसम के लिए वर्गीकरण प्रणाली;
5. वनस्पतियों, जीवों और निर्जीव संसाधनों और उनके व्यावहारिक उपयोगों के बारे में अनुभवजन्य ज्ञान;

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

6. और विश्वदृष्टि या जिस तरह से स्थानीय समूह प्राकृतिक दुनिया के साथ अपने संबंधों को मानता है (एमरी, 1996)।

स्वदेशी ज्ञान एक गतिशील प्रणाली में अंतर्निहित है जिसमें आध्यात्मिकता, रिश्तेदारी, स्थानीय राजनीति और अन्य कारक एक साथ बंधे हैं और एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। शोधकर्ताओं को संस्कृति के किसी अन्य पहलू की जांच करने के लिए तैयार रहना चाहिए जो स्वदेशी ज्ञान को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। उदाहरण के लिए, धर्म स्वदेशी ज्ञान का एक अभिन्न अंग है और इसे आवश्यक रूप से ज्ञान के तकनीकी रूपों से अलग नहीं किया जा सकता है। प्रकृति के बारे में आध्यात्मिक विश्वास प्रभावित कर सकते हैं कि संसाधनों का प्रबंधन कैसे किया जाता है और लोग नई संसाधन प्रबंधन रणनीतियों को अपनाने के लिए कितने इच्छुक हैं (आई आई आर आर, 1996ए)।

स्वदेशी ज्ञान का महत्व

अनुसंधान परियोजनाओं का निर्वचन करते समय शोधकर्ताओं के लिए स्वदेशी ज्ञान पर विचार करना महत्वपूर्ण होने के दो बुनियादी कारण हैं। सर्वप्रथम और सबसे महत्वपूर्ण स्वदेशी ज्ञान को अनुसंधान परियोजनाओं में शामिल करना स्थानीय सशक्तिकरण और विकास, आत्मनिर्भरता बढ़ाने और आत्मनिर्णय को मजबूत करने में योगदान दे सकता है (थ्रुप्प, 1989)। अनुसंधान परियोजनाओं और प्रबंधन योजनाओं में स्वदेशी ज्ञान का उपयोग स्थानीय लोगों और बाहरी वैज्ञानिकों दोनों की नजर में वैधता और विश्वसनीयता देता है, सांस्कृतिक गौरव को बढ़ाता है और इस प्रकार स्थानीय समस्याओं और संसाधनों के साथ स्थानीय समस्याओं को हल करने के लिए प्रेरणा देता है। स्थानीय क्षमता-निर्माण सतत विकास का एक महत्वपूर्ण पहलू है, और शोधकर्ताओं और विकास विशेषज्ञों को ऐसे दृष्टिकोण तैयार करने चाहिए जो उपयुक्त स्वदेशी ज्ञान और संस्थानों का समर्थन और मजबूती प्रदान करें।

दूसरा, स्वदेशी लोग स्थानीय पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों का प्रभावी ढंग से प्रबंधन कैसे किया जा सकता हैं, के बारे में मूल्यवान जानकारी प्रदान कर सकते हैं। स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों में बाहरी रुचि हाल के विश्वव्यापी पारिस्थितिक संकट और इस अहसास से बढ़ी है कि इसके कारण अनुपयुक्त दृष्टिकोण और प्रौद्योगिकियों के आधार पर प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन में आंशिक रूप से निहित हैं। वैज्ञानिक अब मानते हैं कि स्थानीय पारिस्थितिकी को काफी नुकसान पहुंचाए बिना स्वदेशी लोगों ने उस वातावरण का प्रबंधन किया है जिसमें वे पीढ़ियों से रह रहे हैं (एमरी, 1996)। कई लोगों का मानना है कि स्वदेशी ज्ञान इस प्रकार एक शक्तिशाली आधार प्रदान कर सकता है जिससे संसाधनों के प्रबंधन के वैकल्पिक तरीके विकसित किए जा सकते हैं। स्वदेशी ज्ञान प्रौद्योगिकियों और जानकारियों का एक यह फायदा है कि वे स्थानीय रूप से उपलब्ध कौशल और सामग्रियों पर भरोसा करते हैं और इस प्रकार बाहरी स्रोतों से विदेशी प्रौद्योगिकियों को शुरू करने की तुलना में अक्सर अधिक लागत प्रभावी होते हैं। साथ ही, स्थानीय लोग उनसे परिचित हैं और इसलिए उन्हें किसी विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं है (आईआईआरआर, 1996 ए) ।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

स्वदेशी ज्ञान की विशेषताएं - स्वदेशी ज्ञान की कुछ विशेषताएं निम्नलिखित हैं जो संरक्षण और सतत विकास के लिए प्रासंगिक हैं:

1. **स्थानीय रूप से उपयुक्त:** स्वदेशी ज्ञान जीवन के एक ऐसे तरीके का प्रतिनिधित्व करता है जो स्थानीय वातावरण के साथ विकसित हुआ है। इसलिए इसे विशेष रूप से स्थानीय परिस्थितियों की आवश्यकताओं के अनुकूल बनाया गया है।
2. **संसाधनों के दोहन में संयम:** उत्पादन केवल निर्वाह आवश्यकताओं के लिए है केवल तत्काल अस्तित्व के लिए जो आवश्यक है, वह पर्यावरण से लिया जाता है। अतिरिक्त की इच्छा ना करते हुए स्वदेशी ज्ञान को बनाये रखते हुए संसाधनों का दोहन बड़े ही संयम से किया जाता है।
3. **विविध उत्पादन प्रणालियाँ:** किसी एक संसाधन का अत्यधिक दोहन नहीं होता है कई निर्वाह रणनीतियों और विविध उत्पादन प्रणालियों का उपयोग करते हुए स्वदेशी ज्ञान को जीवित रखा जाता है।
4. **प्रकृति के लिए सम्मान:** 'संरक्षण नैतिकता' अक्सर मौजूद होती है। भूमि को पवित्र माना जाता है, मानव अस्तित्व के लिए प्रकृति पर निर्भर है, सभी प्रजातियां आपस में जुड़ी हुई हैं। इसलिए स्थानीय लोगों में प्रकृति के प्रति सम्मान उनके वास्तविक जीवन का अभिन्न अंग होती है जो स्वदेशी ज्ञान को बनाए रखने में मदद करता है।
5. **लचीला:** स्वदेशी ज्ञान नई परिस्थितियों के अनुकूल होने और बाहरी ज्ञान को शामिल करने में सक्षम है। इस ज्ञान की मुख्य विशेषता इसका लचीलापन है जो समग्र को अपनाने की क्षमता को अपने में समाहित किये हुए है ।
6. **सामाजिक जिम्मेदारी:** सामाजिक जिम्मेदारी मजबूत पारिवारिक और सामुदायिक संबंध हैं और उनके साथ भविष्य की पीढ़ियों के लिए भूमि को संरक्षित करने के लिए दायित्व और जिम्मेदारी की भावना है। यह जो सामाजिक जिम्मेदारी का भाव लोगों में जागृत होता है इसके पीछे कहीं न कहीं स्वदेशी ज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका होती है (डेवाल्ट, 1994)।

स्वदेशी ज्ञान की सीमाएं

वैज्ञानिक ज्ञान की तरह, स्वदेशी ज्ञान की भी अपनी सीमाएँ हैं और इन्हें पहचाना जाना चाहिए। स्वदेशी ज्ञान को कभी-कभी अनजाने में स्वीकार कर लिया जाता है क्योंकि यह एक साधारण, सामान्य और भोली धारणा है कि स्वदेशी लोग जो कुछ भी करते हैं वह स्वाभाविक रूप से पर्यावरण के अनुरूप होता है। इस बात के ऐतिहासिक और समकालीन प्रमाण हैं कि स्वदेशी लोगों ने भी अधिक पशुओं को चराने का कार्य, अति-शिकार, या भूमि की अधिक खेती के माध्यम से पर्यावरणीय पाप किए हैं। स्वदेशी ज्ञान को हमेशा 'अच्छा', 'सही' या 'टिकाऊ' होने के बारे में सोचना भ्रामक है। उदाहरणस्वरुप, स्वदेशी ज्ञान के दृष्टिकोण की एक महत्वपूर्ण धारणा यह है कि स्थानीय लोगों को प्राकृतिक संसाधन की अच्छी समझ है क्योंकि वे कई पीढ़ियों से एक ही या समान वातावरण में रहते हैं और प्राकृतिक परिस्थितियों जैसे मिट्टी, वनस्पति, भोजन और औषधीय पौधे आदि के ज्ञान को संचित और संरक्षित

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

किया है। हालांकि, उन परिस्थितियों में जहां स्थानीय लोग वास्तव में एक बिल्कुल अलग पारिस्थितिक क्षेत्र से हाल के प्रवासी हैं, उन्हें अपने नए पर्यावरण के साथ अभी तक अधिक अनुभव नहीं है। इन परिस्थितियों में लोगों का कुछ स्वदेशी ज्ञान मददगार हो सकता है या इससे समस्याएँ भी हो सकती हैं (जैसे, अन्य पारिस्थितिक क्षेत्रों के लिए अनुकूलित कृषि प्रणालियों का उपयोग)। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि विशेष रूप से हाल के प्रवासियों के साथ व्यवहार करते समय, स्थानीय परिस्थितियों के लिए विभिन्न प्रकार के स्वदेशी ज्ञान की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना।

व्यापक रूप में आर्थिक और सामाजिक ताकतों द्वारा स्वदेशी ज्ञान को भी नष्ट किया जा सकता है। बड़े समाजों के साथ एकीकरण के लिए स्वदेशी लोगों पर दबाव अक्सर बहुत अधिक होता है और जैसे-जैसे वे अधिक एकीकृत होते जाते हैं वे सामाजिक संरचनाएं जो स्वदेशी ज्ञान और प्रथाओं को उत्पन्न करती हैं, टूट सकती हैं। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों का विकास, शैक्षिक और धार्मिक प्रणालियों को लागू करना और विभिन्न विकास प्रक्रियाओं के प्रभाव से विश्व संस्कृतियों के 'समरूपीकरण' की ओर बढ़ रहा है (ग्रेनियर, 1998)। नतीजतन स्वदेशी मान्यताओं, मूल्यों, रीति-रिवाजों, जानकारी और प्रथाओं को बदला जा सकता है । कभी-कभी स्वदेशी ज्ञान जो कभी एक विशेष वातावरण में आजीविका हासिल करने के लिए अच्छी तरह से अनुकूलित और प्रभावी था, पर्यावरणीय गिरावट की स्थितियों के तहत अनुपयुक्त हो जाता है (थ्रुप्प, 1989)। हालाँकि स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों में पारिस्थितिक परिवर्तन के अनुकूल होने में लचीलेपन की एक निश्चित मात्रा होती है जब परिवर्तन विशेष रूप से तीव्र या कठोर होता है, तो उनसे जुड़े ज्ञान को अनुपयुक्त और संभवतः परिवर्तित परिस्थितियों में हानि पहुँचाया जा सकता है (ग्रेनियर, 1998)। अंत में यह कह सकते है कि कभी-कभी वह ज्ञान जिस पर स्थानीय लोग भरोसा करते हैं वह गलत या हानिकारक है इसकी जाँच वैज्ञानिक ज्ञान के आधार पर की जानी चाहिए और जिसके आधार पर ऐसे ज्ञान की अनदेखी की जानी चाहिए तथा वैसे स्वदेशी ज्ञान जो लाभप्रद है उसकी विशेषताओं को ध्यान में रखा जाना चाहिए (थ्रुप, 1989)। उदाहरण के लिए, गलत मान्यताओं, दोषपूर्ण प्रयोग या गलत जानकारी पर आधारित अभ्यास खतरनाक हो सकते हैं और यहां तक कि स्वदेशी लोगों की भलाई में सुधार के लिए एक बाधा भी हो सकते हैं। हालांकि, इस तरह के निर्णय लेते समय सावधान रहने की जरूरत है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का वैश्विक परिदृश्य में प्रासंगिकता

भारतीय ज्ञान, परंपरा एवं समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का वैश्विक परिदृश्य में एक उच्च स्थान प्राप्त है क्योंकि भारत की संस्कृति उसकी परंपरा सदियों से लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती आयी है क्योंकि भारत जैसे विभिन्न संस्कृति वाले देश में अनेकता में एकता का पाठ पढ़ाया जाता है और सभी को अपनी अपनी संस्कृति में रहते हुए एकता की भावना को विकसित किया जाता है (ओझा, 2020) जो दुनिया के अन्य देशों के लिए सदैव एक आकर्षक का केंद्र बना रहा है। भारतीय ज्ञान की वसुधैव कुटुम्बकम की अवधारणा विश्व के समस्त देशों में अपनी एक अलग पहचान बनाए हुए है। जो अपनी विविधता, सहिष्णुता, आपसी समझ, धैर्य, शांतिपूर्ण जीवन एवं सह अस्तित्व के लिया विश्व में ख्याति प्राप्त किये हुए है। आज यूरोपीय राष्ट्रों और अमेरिका में योग, आयुर्वेद,

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्राकृतिक चिकित्सा, शाकाहार, यूनानी, होम्योपैथी जैसे उपचार लोकप्रियता प्राप्त कर रहे हैं जो भारतीय ज्ञान परंपरा एवं स्वदेशी ज्ञान को वैश्विक स्तर पर एक उच्च दर्जा प्रदान करता है। भारतीयों को अपनी जड़ी-बूटियों, नीम, दातून, हल्दी एवं गोमूत्र का ख्याल तब आया जब अमेरिका ने इन सब को पेटेंट करवा लिया है। हम सबने योग को उपेक्षित समझकर छोड़ दिया वही योग जब योगा बन दुनिया में सबके सामने आया तो सब उसके मुरीद हो। भारत अपने ज्ञान एवं परंपरा के माध्यम से भाव, राग और ताल से स्पंदन उत्पन्न करके सम्पूर्ण विश्व को मानवता, भाईचारा और संवेदना का पारिवारिक संदेश देना चाहता है, अपनी जीवंत अमूर्त विरासत जो इसकी वैश्विक सभ्यता की विरासत है इस विरासत के माध्यम से विभिन्न राष्ट्रों, समाजों एवं संस्कृतियों के मध्य संस्कृति एवं सभ्यता का एक संवाद बनाने के प्रक्रिया आरंभ होती है (आर्य, 2018)। भारतीय ज्ञान एवं परंपरा में न केवल विश्व-शक्ति बनने की क्षमता है बल्कि विश्व को भोगवाद के राक्षस से बचाने की भी क्षमता है।

निष्कर्ष

आज यूरोपीय राष्ट्रों और अमेरिका में योग, आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा, शाकाहार, यूनानी, होम्योपैथी जैसे उपचार लोकप्रियता प्राप्त कर रहे हैं जो भारतीय ज्ञान परंपरा एवं स्वदेशी ज्ञान को वैश्विक स्तर पर एक उच्च दर्जा प्रदान करता है। स्वदेशी ज्ञान स्थानीय लोगों द्वारा किसी विशेष वातावरण में जीवनयापन करने के लिए उपयोग किया जाने वाला ज्ञान है जो गतिशील और रचनात्मक है, लगातार बढ़ रहा है और नई परिस्थितियों को पूरा करने के लिए अनुकूल है। शब्द 'स्वदेशी ज्ञान' कभी-कभी किसी क्षेत्र के मूल निवासियों के ज्ञान को संदर्भित करता है, जबकि 'स्थानीय ज्ञान' शब्द एक व्यापक शब्द है जो किसी भी ऐसे व्यक्ति के ज्ञान को संदर्भित करता है जो एक क्षेत्र में लंबे समय तक रहा है। स्वदेशी ज्ञान को व्यापक अर्थों में सांस्कृतिक ज्ञान माना जाता है। यह एक गतिशील प्रणाली में अंतर्निहित है जिसमें आध्यात्मिकता, रिश्तेदारी, स्थानीय राजनीति और अन्य कारक एक साथ बंधे हैं और एक दूसरे को प्रभावित करते हैं, और शोधकर्ताओं को स्वदेशी ज्ञान प्रणाली के विशेष भाग की जांच करते समय इसे ध्यान में रखना चाहिए। स्वदेशी ज्ञान के कई सकारात्मक पहलू हैं और स्वदेशी ज्ञान को परियोजनाओं में शामिल करना स्थानीय सशक्तिकरण में योगदान कर सकता है और वैकल्पिक प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन रणनीतियों के लिए मूल्यवान निविष्ट (इनपुट) प्रदान कर सकता है। हालाँकि स्वदेशी ज्ञान की भी अपनी सीमाएँ हैं और शोधकर्ताओं को इसे भावुक और कल्पनाशील करने और यह मानने की गलती नहीं करनी चाहिए कि स्वदेशी लोग जो कुछ भी करते हैं वह सही या टिकाऊ होता है।

संदर्भ

तिवारी, आर. एन. (2021). भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. राष्ट्रीय शिक्षा. रिट्राइव्ड फ्रॉम 6 मार्च, समय 08:09. https://rashtriyashiksha.com/indian-knowledge-tradition-and-national-education-policy/

ओझा, एस. एस. (2020). भारतीय शिक्षा नीति-2020 और भारतीय ज्ञान परंपरा, अधिगम. 17. 58-64.

सक्सेना, एस. (2019). भारतीय परंपराओं का विदेशों में अस्तित्व, यूनियन सृजन. 4(2). 24-25. अप्रैल-जून.

आर्य, ए. के. (2018). भारतीय ज्ञान परम्परा सामाजिक जरूरतों की उपज, मीडिया नवचिंतन, 68-73. जनवरी-मार्च.

मिस्ट्री, जे. (2009). इंडिजेनस नॉलेज, इंटरनेशनल इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ ह्यूमन जियोग्राफी. 371-376. https://doi.org/10.1016/B978-008044910-4.00101-2

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

राव, एस. एस. (2006). इंडिजेनस नॉलेज आर्गेनाईजेशन: एन इंडियन सिनेरियो, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इनफॉर्मेशन मैनेजमेंट. 26(3). 224-233. https://doi.org/10.1016/j.ijinfomgt.2006.02.003

लंगिल्ल, एस. (2001). इंट्रोडक्शन टू इंडिजेनस नॉलेज, एग्रोफॉरेस्ट्री, https://www.agroforestry.org/the-overstory/181-overstory-82-introduction-to-indigenous-knowledge

लंगिल्ल, एस. (1999). इंडिजेनस नॉलेज: ए रिसोर्स किट फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट रिसर्चर्स इन ड्राईलैंड अफ्रीका. पीपल, लैंड एंड वाटर प्रोग्राम इनिशिएटिव, आईडीआरसी, ओटावा, कनाडा.

ग्रेनियर, एल. (1998). वर्किंग विथ इंडिजेनस नॉलेज: ए गाइड फॉर रिसर्चर्स. आई डी आर सी: ओटावा, कनाडा.

एमरी, ए. आर. (1996). द पार्टिसिपेशन ऑफ़ इंडिजेनस पीपल एंड देयर नॉलेज इन इनवायरमेंटल असेसमेंट एंड डेवलपमेंट प्लानिंग (ड्राफ्ट). सेंटर फॉर ट्रेडिशनल नॉलेज: ओटावा, कनाडा.

डेवाल्ट, बी. आर. (1994). यूजिंग इंडिजेनस नॉलेज टू इम्प्रूव एग्रीकल्चर एंड नेचुरल रिसोर्स मैनेजमेंट, ह्यूमन आर्गेनाइजेशन. 53(2). 123-131.

जॉनसन, एम. (1992). लोर: कैप्चरिंग ट्रेडिशनल इनवायरमेंटल नॉलेज. आईडीआरसी: ओटावा, कनाडा.

वॉरेन, डी. एम. (1991). यूजिंग इंडिजेनस नॉलेज फॉर एग्रीकल्चर डेवलपमेंट. वर्ल्ड बैंक डिस्कसन पेपर. वाशिंगटन, डी.सी. 127.

थ्रुप्प, एल. ए. (1989). लेगीटीमायिज़िंग लोकल नॉलेज: फ्रॉम डिस्प्लेसमेंट टू एम्पावरमेंट फॉर थर्ड वर्ल्ड पीपल. एग्रीकल्चर एंड ह्यूमन वैल्यूज. समर इशू. 13-24.

आईआईआरआर (इंटरनेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ रूरल रिकंस्ट्रक्शन). (1996 ए). रिकॉर्डिंग एंड यूजिंग इंडिजेनस नॉलेज: ए मैन्युअल. आईआईआरआर: शिलांग, कैविट, फिलिपिन्स.

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies